अध्याय 6

पाप से बचना

पौलुस, अन्यजातियों के लिए प्रेरित, प्रचारक था, दार्शनिक नहीं। उसने 1 कुरिन्थियों में सुसमाचार का धर्मज्ञान प्रस्तुत किया, परन्तु उसने उसके विवरण को समझाने के लिए कम समय लगाया। कोरिन्थ के अनेकों मसीहियों को अपने मूर्तिपूजक समाज का प्रथमदृष्टया ज्ञान था। वे व्यावाहारिक लोग थे जो अपना ध्यान रखते थे और अपने काम से काम रखते थे। पौलुस के पाठक, अधिकाँशतः, यूनानी सामाजिकार्थिक स्तर में नीच स्तर के नहीं थे, जिन्हें जीवित रहने के लिए ही, अपने हाथों से कठिन कार्य करना पड़ता था। उनके पास कुछ सम्पन्नता थी, वे उन बातों से अवगत थे जो रोमी संसार के उस चौराहे पर फलने-फूलने वाले जटिल दार्शनिक दायरों में हो रहा था। पौलुस उन्हें गहराई से पैठ बनाए हुए अन्यजाति-मूर्तिपूजक जीवन शैली में से निकालकर सुसमाचार की आज्ञाकारिता के लिए लाया था, उस एकमात्र सच्चे परमेश्वर के सन्देश के द्वारा जिसने अपने पुत्र को उन्हें पाप से छुड़ाने के लिए भेजा था। उनका सुसमाचार को स्वीकार करना आरंभ करने का महत्वपूर्ण बिंदु था।

वे जो कोरिन्थ में थे और मसीह में आए थे, उन्हें अनेकों महत्वपूर्ण समायोजन करने थे। ईश्वर के बारे में नए विचारों को स्वीकार करने के अतिरिक्त, उन्हें परमेश्वर का जन होकर एक दूसरे से व्यवहार करना भी सीखना था। पौलुस की कुंठा 1 कुरिन्थियों में थी कि उसके सहविश्वासी बहुत धीमी गति से उन्नति कर रहे थे। वे प्रिय उपदेशकों के प्रति निष्ठा के साथ बड़े हुए थे। वे विभिन्न मूर्तिपूजक अन्यजाति समकालीन लोगों के समान गुटों में बंट रहे थे, चाहे उनके परस्पर मतभेद वास्तविक शिक्षाओं पर नहीं वरन व्यक्तिगत पक्षपात पर आधारित थे। वे एक दूसरे को अपनी कृत्रिमता और शब्दों में सूक्ष्म भेद कर पाने की क्षमता से प्रभावित करने की योग्यता पर, मसीही समाज की एकता को बलिदान कर रहे थे।

साथी मसीहियों के विरुद्ध मुकदमों से बचना (6:1-11)[1]

विश्वासी जब उपदेशकों के प्रति निष्ठा को लेकर झगड़ रहे थे, तो वे भक्ति के जीवन को दुर्बल करने की क्षमता रखने वाली बातों की उपेक्षा कर रहे थे। दो बातें इस कलीसिया के पुरानी बातों को छोड़ कर नई को अपनाने की आवश्यकता को चित्रित करती हैं। (1) कुरिन्थी मसीही, अपने में से एक ऐसे पुरुष को सहन कर रहे थे, जो खुलकर अपने पिता की पत्नि के साथ रह रहा था।

(2) विश्वासी भाई परस्पर वैधानिक मतभेदों का निवारण न्यायालयों में अविश्वासियों के सामने ले जाकर कर रहे थे।

कुरिन्थियों की कलीसिया में उत्पन्न हुई परिस्थितियों का किसी अन्य कलीसिया, प्राचीन या वर्तमान, में सटीक वैसा ही होने की संभावना कम ही है। फिर भी पौलुस द्वारा दिए गए निर्देश उनके लिए प्रासंगिक हैं जिन्हें नैतिक मुद्दों को संभालना पड़ता है, वे चाहे कैसे भी हों। परमेश्वर ने मसीहियों को उत्तरदायित्व दिया है कि पौलुस द्वारा संबोधित विशिष्ट बातों में से सिद्धांत निकालें। ये सिद्धांत हमारा मार्गदर्शन करेंगे जब हम वैसी ही समस्याओं का सामना करेंगे। पौलुस पुरानी मूर्तिपूजक-अन्यजाति परंपराओं और मसीही सिद्धांत एवं नैतिकता के मध्य के तनाव से भली-भांति अवगत था। उसकी माँग थी कि मसीही अपनी पुरानी रीतियों से भिन्न होकर बर्ताव करें। इस उदाहरण का मसीहियों के लिए हर समय और स्थान पर महत्वपूर्ण निहितार्थ है।

पवित्र लोग संसार का न्याय करेंगे (6:1-3)

1क्या तुम में से किसी को यह हियाव है, कि जब दूसरे के साथ झगड़ा हो, तो फैसले के लिये अधिमियों के पास जाए; और पवित्र लोगों के पास न जाए? 2क्या तुम नहीं जानते, कि पवित्र लोग जगत का न्याय करेंगे? इसलिए जब तुम्हें जगत का न्याय करना है, तो क्या तुम छोटे से छोटे झगड़ों का भी निर्णय करने के योग्य नहीं? 3क्या तुम नहीं जानते, कि हम स्वर्गदूतों का न्याय करेंगे? तो क्या सांसारिक बातों का निर्णय न करें?

आयत 1. जैसा कि उस व्यक्ति के अपने पिता की पत्नि के साथ रहने की समस्या के प्रति था, पौलुस को भाइयों में मुकद्दमे होने की समस्या का भी विश्वास नहीं हो रहा था। उसने पहले लिखा था, "यहां तक सुनने में आता है, कि तुम में व्यभिचार होता है ..." (5:1); और यहाँ उसने पूछा, **तुम में से किसी को यह हियाव है ... तो फैसले के लिये अधर्मियों के पास जाए?** प्रेरित विस्मित था। क्या ऐसा था कि ये मसीही मसीह में सामुदायिक जीवन के आधारभूत अर्थ से चूक गए थे? उस पुरुष के व्यभिचार में पड़े हुए होने की अवहेलना करने से, कलीसिया अपने सामुदायिक उत्तरदायित्व की उपेक्षा कर रही थी। सदस्यों का कर्तव्य था कि वे सही और गलत में न्याय करें और कलीसिया के अनुशासन को लागू करें।

> न केवल उन्होंने अपने मध्य चौंका देने वाले दुष्कर्म को उसका न्याय करे बिना छोड़ दिया; वरन समुदाय के सदस्यों के मध्य छोटे-मोटे आर्थिक विवादों को लेकर वे बाहरी न्यायाधीशों, संभवतः औपनिवेशिक न्यायाधीशों, की ओर मुड़ गए (6:1-11)।[2]

चिंता के दोनों विषयों, अपने पिता की पत्नि के साथ रहने वाले पुरुष की अनैतिकता और विश्वासियों के बीच सांसारिक न्यायालयों में मुकदमों की

समस्या की ओर उसे सूचना देने वालों ने पौलुस का ध्यान खींचा। ये विषय उस पत्र में नहीं थे जिसे स्तिफ़नास और फ़ूरतूनातुस और अखइकुस ने कलीसिया से लाकर दिया था (16:17; 7:1)। हो सकता है कि उसे सूचना देने वाले खलोए के घराने के लोग (1:11) थे। जब पौलुस, 6:12-20 में यौन अनैतिकता के विषय पर वापस लौट कर आया, तब भी कलीसिया के सदस्यों द्वारा उपद्रवी सदस्यों को अनुशासित करने के उत्तरदायित्व का विषय पृष्ठभूमि में था।

कोरिन्थ में लगभग 50 इ. में मसीहियों की संख्या का अनुमान लगाना कठिन है। क्योंकि कलीसिया कभी-कभी घर में एकत्रित होती थी इसलिए मण्डली बड़ी नहीं रही होगी। लगभग पचास या सौ के समुदाय में, ऐसा असंभाव्य रहा होगा कि सामान्यतः एक विश्वासी दूसरे के विरुद्ध न्यायालय जाए। हो सकता है कि ऐसी एक विशिष्ट घटना ही प्रेरित के सम्मुख आई होगी। मसीही जो अन्यजाति-मूर्तिपूजकों के समाज में बसे हुए थे वे संपत्ति के विषयों के विवादों को लेकर नगर के न्यायालयों में जाने के आदि थे। इस विषय पर पौलुस का क्रोध दो बातों पर आधारित था। सांसारिक न्यायालय भ्रष्टाचार में बहुत अधिक लिप्त थे, और पौलुस यहूदियों द्वारा न्याय किए जाने के अधिक सकारात्मक आदर्श के बारे में जानता था। रोमी शासन की अधीनता में भी, यहूदिया और प्रवासी इलाकों में यहूदी समुदाय भली-भांति संचालित न्यायिक प्रक्रिया का पालन करते थे।

जब पौलुस ने 6:1 में **अधर्मियों** (οἱ ἄδικοι, *होई अडिको)* के सम्मुख न्याय के लिए जाने को लेकर असंतोष प्रकट किया, तो वह रोमी संसार में न्यायालयों की प्रक्रिया का लापरवाही से मूल्याँकन नहीं कर रहा था। धनी लोग न्यायालयों को वश में रखते थे; वह प्रणाली अपक्षपाती न्याय प्रदान करने के लिए नहीं जानी जाती थी। निर्धन न्यायालयों में कम ही जाते थे; और जब जाते थे, तो उचित सुनवाई होने की कम ही संभावना होती थी। डेविड ई. गारलैंड ने यह आँकलन दिया: "साक्ष्य संकेत करते हैं कि इस समय के दीवानी न्यायालय कम निष्पक्ष थे और भ्रष्टाचार बहुत व्याप्त था।"[3] सिसरो ने, जो एक विख्यात वक्ता, अधिवक्ता, और राजनेता था, प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व में एक रोमी न्यायालय के सामने इस राय के साथ, जिससे रोमी और परदेशी सहमत थे, आरंभ किया: "ये न्यायालय ... कभी किसी मनुष्य को दोषी नहीं ठहराएंगे, यदि उसके पास धन है तो।"[4] याकूब ने पूछा, "क्या धनी लोग तुम पर अत्याचार नहीं करते? और क्या वे ही तुम्हें कचहरियों में घसीट घसीट कर नहीं ले जाते?" (याकूब 2:6)।

पौलुस नहीं चाहता था कि रोमी न्याय की दोहरे मापदण्ड - एक धनियों के लिए और दूसरा निर्धनों के लिए - वाली प्रणाली विश्वासियों के बीच न्याय चुकाए। कोरिन्थ के कुछ विश्वासी निर्धन और निर्बल थे, परन्तु प्रमाण सुझाते हैं कि अन्य सदस्यों के पास काफ़ी संपदा थी और इस कारण सांसारिक लोगों में उनका उच्च ओहदा भी था। गेयुस के पास इतना बड़ा घर था कि वह कलीसिया के लिए एकत्र होने के स्थान का कार्य करता था। लगता है कि कोरिन्थ के इरास्तुस के पास एक महत्वपूर्ण नागरिक नौकरी थी (देखें रोम.16:23)।

स्तिफ्नास पौलुस से इफ़सुस में परामर्श लेने, प्रत्यक्षतः अपने साथ अपने दो दास लेकर आया था। संपत्ति और ओह्दे ने कुछ कोरिन्थी मसीहियों को ऐसा भोजन बनाने की अनुमति दी जिसे वे बाद में उनके साथ बाँटने से मना करते थे जिनके पास कम था (1 कुरि. 11:21)। इसमें संदेह नहीं कि पौलुस का निष्कर्ष सही होता कि कोरिन्थ के निर्धन मसीहियों के पास सांसारिक न्यायालों से न्याय मिलने के कम ही आसार थे यदि उनके विरुद्ध धनी भाई खड़े होते। ऐसा पक्षपात उसे विचलित करता था। व्यक्तिगत स्तर पर, रोमी न्यायालयों का न्याय प्रदान करने के लिए विफल होने से पौलुस अवगत था। फ़िलिप्पी में उसे घसीट कर सार्वजनिक चौक में ले जाया गया और अपना बचाव करने का अवसर दिए बिना पीटा गया (प्रेरितों. 16:19)। इफ़सुस में, देमेत्रियुस दंगा भड़का सका किसी न्यायियिक नियंत्रण के आभाव में (प्रेरितों 19:24, 29)। इस प्रक्रिया में प्रेरित ने लगभग अपनी जान ही गँवा दी थी (2 कुरि. 1:8, 9)। फ़ीलिक्स ने उसे बंदीगृह में रखा क्योंकि "उसे पौलुस से कुछ रूपये मिलने की भी आस थी" (प्रेरितों 24:26)। प्रेरित के पास इस बात को लेकर रोष प्रकट करने के उचित कारण थे कि कुरिन्थी मसीही "फ़ैसले के लिये अधिमिर्यों के पास जाएं; और पवित्र लोगों के पास न जाएं?" (1 कुरि. 6:1)।

रोमी न्यायिक प्रक्रिया के प्रति निम्न मूल्याँकन रखने के साथ पौलुस के पास एक सकारात्मक आदर्श था जिसके अंतर्गत यहूदी समुदाय न्याय करते थे। बिना हिचकिचाहट, क्लौदियास लायसिय्स ने यरूशलेम के यहूदी न्यायालय को पौलुस के विरुद्ध अभियोग गठित करने को कह दिया (प्रेरितों 22:30; देखें 23:26; 24:7, 22)। उनके अधीन लोगों द्वारा अपने दीवानी और न्यायिक मामलों की स्वयं देखभाल करने से रोमी प्रसन्न होते थे। यह दावा जो यहूदियों ने पिलातुस के सम्मुख रखा कि "हमें अधिकार नहीं कि किसी का प्राण लें" (यूहन्ना 18:31) झूठा था। रोमी इस बात पर बहुत कम ध्यान देते यदि यहूदी यीशु को नगर के बाहर ले जाकर अपने आप ही पत्थरवाह कर देते, जैसा उन्होंने वास्तव में स्तिफ़नुस के समय किया (प्रेरितों 7:58)। राजनैतिक कारणों से, याजकीय समाज यीशु की मृत्यु का दोषी रोमियों को बनाना चाहते थे। पीलातुस जानता था कि वे क्या कर रहे थे; उसने यीशु के निर्दोष होने को पहचाना परन्तु उसे छोड़ देने का साहस नहीं जुटा पाया। समस्त यहूदी प्रवासियों में सामान्यतः यहूदिया के आदर्श पर स्थापित न्यायालय पाए जाते थे। "यहूदी जहाँ कहीं भी जाते थे वहाँ वे अपने साथ अपनी व्यवस्था ले जाते थे और उसके अनुसार अपने समुदाय के लोगों के लिए न्यायालय बना लेते थे।"[5]

वे लोग जिनका अनुभव पश्चिमी सभ्यता के वर्तमान न्यायालयों का है, उन्हें यह विचित्र लगेगा कि रोमी न्यायालय अपने अधिकार क्षेत्र में, वैसा ही अधिकार रखने वाले यहूदी या मसीही न्यायलयों के होने को सहन करें। समस्या कम गंभीर हो जाती है जब इस बात को पहचान लिया जाए कि रोमियों के दृष्टिकोण से, न्यायिक प्रक्रिया ऐसी सेवा थी जो राज्य अपनी प्रजा को काफ़ी खर्चा वहन करके प्रदान करता था। नागरिक अधिकारी प्रसन्न रहते यदि जातीय समुदाय

अपनी न्यायिक व्यवस्था लागू करते और स्वयं ही अपना न्याय चुका लेते। यरूशलेम के महायाजक तो इतने आगे बढ़ चुके थे कि दमिश्क के आराधनालयों पर लागू करने के लिए न्यायिक निर्णय प्रेषित करते थे (प्रेरितों 9:1, 2)। एमिल शूर्र ने लिखा, "इस सब से यह देखा जा सकता है कि यहूदी अपने सदस्यों के प्रति न केवल दीवानी वरन एक प्रकार का आपराधिक न्यायाधिकार भी रखते थे।"[6] पौलुस के लिए, यहूदियों के न्यायालय ऐसा आदर्श प्रदान करते थे जो मसीहियों के लिए सांसारिक न्यायालयों से बढ़कर समान न्याय प्रदान करते।

आयत 2. यद्यपि पौलुस स्पष्टतः कह रहा था कि सांसारिक न्यायालयों के पास जाने के स्थान पर मसीहियों को अपने विवाद अपने ही न्यायाधीशों के सामने सुलझा लेने चाहिए, इस बात की सहायता के लिए जो तर्क उसने दिया वह इतना स्पष्ट नहीं है। उसने पूछा, **क्या तुम नहीं जानते, कि पवित्र लोग जगत का न्याय करेंगे?** दो विचार सहायक हो सकते हैं। पहला, प्रतीत होता है कि प्रेरित दानिय्येल 7:22 का प्रयोग कर रहा था: "... और परमप्रधान के पवित्र लोग न्यायी न ठहरे।" यह खण्ड LXX में इस प्रकार आया है, καὶ τὴν κρίσιν ἔδωκε τοῖς ἁγίοις τοῦ ὑψίστου *(काई टेन क्रिसिन एडोके तोइस हगिओइस टू हूपसिस्टू),* "... और उसने परमप्रधान के लोगों को न्यायी ठहराया," जिसको सामान्यतः समझा जाता था कि समय के अन्त होने पर परमेश्वर चुने हुओं को न्यायी नियुक्त करेगा। गोर्डन डी. फ़ी ने ध्यान किया कि यह खण्ड "विभिन्न प्रकार के लेखों में पाया जाता है, कुमरान के लेखों सहित।"[7] यहाँ मुद्दा यह नहीं था कि परमेश्वर किस प्रकार से पवित्र लोगों को न्याय करने में सम्मिलित करेगा। इसे बस एक तथ्य के रूप में कहा गया था कि वे संसार का न्याय करने में भाग लेंगे।

दूसरे, पौलुस का तर्क बड़े से छोटे की ओर किया गया; अर्थात, जब वह जगत का न्याय करेगा तब यदि परमेश्वर मसीहियों की सहायता लेगा, तो निश्चय ही वे लोग कम महत्वपूर्ण बातों का न्याय करने की क्षमता रखते हैं। मसीहियों पर, वर्तमान युग में, "बाहर वालों" का न्याय करने का कोई उत्तरदायित्व नहीं है; उन्हें तो कलीसिया के "भीतर वालों का न्याय" करना था (5:12)। जब प्रभु लौट कर आएगा और समस्त मानवजाति परमेश्वर के सामने न्याय के लिए खड़ी होगी (2 कुरि. 5:10), तो मसीहियों के भक्तिपूर्ण जीवन उसी प्रकार लोगों का न्याय करेंगे जैसे नूह की धार्मिकता ने बाढ़ से पहले के संसार को दोषी ठहराया था (इब्रा. 11:7)।

पौलुस ने आगे और प्रश्न पूछा**, सो जब तुम्हें जगत का न्याय करना हे, तो क्या तुम छोटे से छोटे झगड़ों का भी निर्णय करने के योग्य नहीं?** इस प्रश्न की दलील यह है कि, पवित्र लोग संसार का न्याय करने में भाग लेंगे, इसलिए वे छोटी बातों पर निर्णय लेने के लिए सक्षम हैं। मसीहियों को अपने विवाद मसीही समुदाय के अन्दर ही सुलझाने थे। मतभेदों का इस प्रकार निवारण करने से सच्चा न्याय होने की संभावना अधिक थी।

आयत 3. यह कि विश्वासियों के भक्तिपूर्ण जीवनों का, परमेश्वर द्वारा मानवजाति के न्याय पर प्रभाव होगा अपने आप में महत्वपूर्ण है, परन्तु पौलुस ने

संकेत किया कि उस न्यायी का अपने पवित्र लोगों के प्रति उच्च सम्मान, इससे और भी आगे जाता है। व्याकरण के पहले व्यक्ति की ओर बदलते हुए, प्रेरित ने पूछा, **क्या तुम नहीं जानते, कि हम स्वर्गदूतों का न्याय करेंगे?** दोनों ही, 2 पतरस 2:4 और यहूदा 6 उन स्वर्गदूतों की बात करते हैं जिन्होंने पाप किया। पवित्रशास्त्र इस तथ्य के अतिरिक्त कम ही जानकारी प्रदान करता है कि कुछ स्वर्गदूतों ने पाप किया और अपने उल्लंघन के लिए उत्तरदायी हैं जैसे कि मनुष्य भी हैं। इस बात को कहने में कि विश्वासियों द्वारा स्वर्गदूतों का न्याय होगा, पौलुस, पतरस, और यहूदा ने शैतान का कोई उल्लेख नहीं किया।

"जगत" का या "स्वर्गदूतों" का न्याय करने में मसीहियों की सटीक भूमिका का कोई विशेष विवरण नहीं दिया गया है। निश्चय ही पौलुस का यह सुझाव नहीं था कि परमेश्वर न्यायी मनुष्यों की बात को स्वीकार कर लेगा यदि उनका न्यायिक निर्णय उसके निर्णय से भिन्न होगा। इससे अधिक यथोचित यह है कि मसीहियों के विश्वासयोग्य जीवन स्वर्गदूतों के पापों पर उसी प्रकार न्याय लाएंगे जैसे कि उनके भले जीवन भक्तिहीन संसार पर न्याय करेंगे (देखें मत्ती 19:28; इब्रा. 11:7)। प्रेरित द्वारा स्वर्गदूतों का उल्लेख 6:2 के प्रश्नों को और दृढता प्रदान करता है। कुरिन्थी मसीही न्याय करने के योग्य थे यदि उनके सदस्यों में **सांसारिक बातों पर विवाद उठ खड़े हों**।

मुकद्दमे अविश्वासियों के लिए हैं (6:4-8)

[4]सो यदि तुम्हें सांसारिक बातों का निर्णय करना हो, तो क्या उन्हीं को बैठाओगे जो कलीसिया में कुछ नहीं समझे जाते हैं [5]मैं तुम्हें लज्ज़ित करने के लिये यह कहता हूं। क्या सचमुच तुम में एक भी बुद्धिमान नहीं मिलता, जो अपने भाइयों का निर्णय कर सके? [6]तुम में भाई भाई में मुकद्दमा होता है, और वह भी अविश्वासियों के साम्हने। [7]परन्तु सचमुच तुम में बड़ा दोष तो यह है, कि आपस में मुकद्दमा करते हो। अन्याय क्यों नहीं सहते? अपनी हानि क्यों नहीं सहते? [8]तुम तो स्वयं अन्याय करते और हानि पहुंचाते हो, और वह भी भाइयों को।

आयत 4. पौलुस का आलंकारिक प्रश्न पवित्र जनों द्वारा सांसारिक बातों से संबंधित विवादों को सांसारिक न्यायालयों के सम्मुख ले जाने की असंगति बलपूर्वक दिखाते हैं। **सांसारिक बातों** (βιωτικά, *बायोटिका)* का संबंध परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति या फिर व्यक्तिगत संबंधों से है। मीरास का अधिकार, बाज़ार में दुकान लगाने का स्थान, किसी क़र्ज़ का निपटारा, तय किया गया मेहनताना आदि के कारण मिलनसार लोग विवादों में पड़े होंगे। ये संघर्ष बढ़कर क्रोध और कड़ुवाहट ला सकते थे। कलीसिया की एकता और संगति दुर्बल होती यदि विश्वासी परस्पर मतभेदों के निवारण के लिए सांसारिक न्यायलयों की शरण में जाते, जहाँ घूस और चापलूसी का बोलबाला था।

पौलुस विश्वासियों के मध्य होने वाले मतभेदों को घटा नहीं रहा था, न ही

वह यह कह रहा था कि ऐसे मतभेदों का निवारण, उन्हें सदा ही सही या गलत के मुद्दे बनाकर किया जा सकता था। उसका कहना था कि कलीसिया के आदरणीय लोग सांसारिक लोगों की अपेक्षा सही निर्णय देने में, जो सभी को स्वीकार हों, अधिक सक्षम थे। आयत 4 को NIV 1984 ने आलंकारिक प्रश्न नहीं बनाया। उन्होंने καθίζετε (*कथिज़ेते*, "नियुक्त") को अनिवार्य लेकर, इस प्रकार अनुवाद किया: "इसलिए, यदि तुम्हारे मध्य इन बातों को लेकर विवाद हैं, तो अपने लिए न्यायाधीश नियुक्त कर लो, चाहे वे कलीसिया में कम स्तर के ही क्यों न हों।" तात्पर्य यह है कि कलीसिया के लिए यह भला है कि वह अपने सबसे कम योग्य सदस्यों को न्यायाधीश बनाए इसकी अपेक्षा कि मसीही एक दूसरे के विरुद्ध न्याय के लिए सांसारिक न्यायालयों में जाएँ। यह निर्णय करना कठिन है कि NIV 1984 या NASB में से किसका अनुवाद अधिक अच्छा है। दोनों ही संदर्भ में सही बैठते हैं, परन्तु पहले वाला पाठकों की आशा पर, कि पौलुस का अपने पाठकों से आग्रह होगा कि वे अपने मतभेदों को कलीसिया के भीतर ही निपटाएं, अधिक सटीक बैठता है।

आयत 5. प्रेरित को यह व्यंगात्मक लगा कि कुरिन्थी ऐसे व्यवहार कर रहे थे मानो वे भाइयों में परस्पर उठने वाले विवादों के विषय सही निर्णय करने में असक्षम हैं। अपने पक्षपातपूर्ण कलह के समय तो उन्होंने अपनी बुद्धिमता की उच्च राय दिखाई थी (देखें 3:18-20)। तो अब उस स्वमूल्याँकन वाली बुद्धिमता का क्या हुआ? ऐसा क्यों कि वह उनके दार्शनिक तर्कों में तो इतनी विदित थी, परन्तु विवादों के निवारण की व्यावाहारिक बातों में उसका इतना अभाव था? प्रेरित की आशा थी कि कलीसिया के जीवन में भी बुद्धिमता का उपयोग किया जाएगा।

पौलुस ने जो आत्मिक वरदान इन विश्वासियों में देखे थे उनमें से एक था भला न्याय जो विवाद उठने पर उनका मार्गदर्शन कर सकता था। प्रत्यक्षतः कुछ में "प्रधान" (जो κυβέρνησις, *कूबरनेसिस* से है) होने का वरदान था, 12:28 के अनुसार। इस शब्द का तात्पर्य है उस प्रकार से मार्गदर्शन करना जैसे पानी के जहाज़ का चालक जहाज़ को सही दिशा में निर्देशित करता है। जिनके पास यह वरदान था उन्हें आवश्यकता के अनुसार आगे आना था और कुरिन्थ की कलीसिया का इन कठिन समयों में मार्गदर्शन करना था। जिसके पास यह वरदान है उसका इस उत्तरदायित्व को स्वीकार करने से इंकार करना उसके विश्वास पर प्रश्न चिन्ह लगाता है। समझदार भाइयों को, जब कलीसिया को उनकी आवश्यकता थी, तब न्यायिक निर्णय करने से हिचकिचाना नहीं चाहिए था। यदि कलीसिया में समझ-बूझ वाले लोग नहीं थे या फिर जो मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए समझदार थे उनकी ओर देखा नहीं जा रहा था, तो यह उसके लिए लज्जा की बात थी।

आयत 6. पौलुस द्वारा उन परिस्थितियों के, जिनके अंतर्गत एक भाई दूसरे के विरुद्ध सांसारिक न्यायालय में गया था, प्रति व्यवहार में सर्वत्र अविश्वास की प्रतिक्रिया की गई। समस्या दोहरी थी: समझदार विश्वासियों ने अपने आप को भीरु दिखाया था, और सांसारिक दृष्टिकोण रखने वाले मसीही, विवादों को

सुलझाने के लिए समझौते करने के अनिच्छुक थे। इसका परिणाम न केवल कलीसिया में पाखण्ड था, वरन सामाजिक निरादर भी था: **भाई भाई में मुकद्दमा होता है।** अपने मुकद्दमे को अविश्वासियों के साम्हने प्रस्तुत करने के द्वारा मसीही सार्वजनिक रूप से यह घोषणा कर रहे थे कि उनमें ऐसा कोई नहीं था जो इतना समझदार या विश्वासयोग्य था कि इन बातों का न्याय कर सके। वे अपने आप को वैसे ही लोभी, और स्वार्थी विज्ञापित कर रहे थे जैसे वे मसीह को जानने से पहले होते थे। प्रभु को उनसे इससे अधिक भले व्यवहार की आशा थी, और पौलुस को भी।

आयत 7. भाइयों के एक दूसरे के विरुद्ध न्यायालय जाने से भी अधिक विचलित करने वाली बात थी उनका उस उदारता और क्षमा की अवहेलना करना जो विश्वासीयों के मध्य परस्पर व्यवहार का विशिष्ट गुण होना चाहिए। न केवल कलीसिया ने अपने विवादों का निवारण समझदार लोगों से मार्गदर्शन माँगकर करने से इंकार किया था, वरन उन्होंने परस्पर प्रतिद्वन्दी होने के भाव भी दिखाए थे। कोई भी जन छोटी सी भी बात को छोड़ने को तैयार नहीं था यदि उससे उनके लिए थोड़े सा भी लाभ होने की आशा था।

पौलुस ने कहा कि, **सचमुच तुम में बड़ा दोष** तो यह है, जब **भाई आपस में मुकद्दमा करते हैं**। यीशु ने उदहारण रखा था जिसका अनुसरण करने से भला ही होता। यद्यपि वह धनी था, उनके लिए यीशु निर्धन बन गया जिससे कि वे धनी बन सकें (2 कुरि. 8:9)। यदि कोई शत्रु यीशु के अनुयायी पर उसके कुर्ते के लिए नालिश करे, यीशु ने कहा कि उसके अनुयायी को उस शत्रु को दोहर भी दे देनी चाहिए (मत्ती 5:40)। उसने आगे कहा “जो कोई तुझ से मांगे, उसे दे; और जो तुझ से उधार लेना चाहे, उस से मुंह न मोड़” (मत्ती 5:42)। जब विश्वासी ही विश्वासी के विरुद्ध न्यायालय जाएंगे, तो उनमें से कोई भी विजयी नहीं होगा।

जब एक मसीही इस बात के लिए निश्चित है कि एक सह-विश्वासी ने उसके साथ अन्याय किया है, तो उसके लिए एक विकल्प है कि बात को जाने दे और अन्याय को क्षमा कर दे। यदि कोई भाई सामान्य से अधिक मेहनताना लेने के लिए अड़ जाता है तो सर्वाधिक भला मसीही आचरण होगा कि उसे वह अधिक रकम चुका दी जाए। यदि वह नापी गई से कुछ फुट अधिक भूमि पर दावा करता है, तो यीशु का कहना होगा कि उसे वह भूमि ले लेने दो। उस सख्त न्याय के स्थान पर, जिसे हम मानते हैं कि हमें मिलना चाहिए, पौलुस ने पूछा, **वरन अन्याय क्यों नहीं सहते? अपनी हानि क्यों नहीं सहते?**

इस उदारता की सीमाएं क्या हैं? क्या करना चाहिए जब लालच, धैर्य और कृपा पर हावी होने लगता है? जब भली-मंशा और भले-विश्वास के साथ सौदा करना हारने लगता है तो कलीसिया के समझदार लोगों को बीच में आ जाना चाहिए। अन्याय के दावों का विश्वासियों के समुदाय ही में निवारण हो जाना चाहिए। इस कार्य-विधि का परामर्श वर्तमान मसीहियों के लिए भी वैसा ही है, जैसे तब प्राचीन के लिए था।

आयत 8. जिस बात ने पौलुस को क्रोधित किया वह यह थी कि कोरिन्थ के

मसीही स्थानीय नियमों की सूक्ष्मताओं को अपने लाभ के लिए उपयोग करने पर अधिक ध्यान दे रहे थे न कि न्याय पर। शान्ति और सद्भाव के लिए गलती सह लेने की भावना प्रदर्शित करने के स्थान पर, पौलुस ने उन पर आरोप लगाया कि, **अन्याय करते और हानि पहुंचाते हो।** यह तो बुरा था ही कि विश्वासी अपनी अनुकूल परिस्थिति को अन्यायी होने की सीमा तक अविश्वासी पीड़ितों के विरुद्ध प्रयोग करें, परन्तु कोरिन्थ के कुछ लोग उनके साथ भी वही कर रहे थे जो उनके सह-विश्वासी थे।

पौलुस की आवाज़ को सुनना रोचक होता, जब उसने दोषियों की आँख से आँख मिलाकर कहा, और वह भी भाइयों को। विश्वासियों के मध्य एकता और भाईचारे का अनुपम बंधन होता है (गला. 6:10)। जब एक मसीही उनके साथ अन्याय करता है जो यीशु के प्रभु होने का उसके साथ विश्वास साझा करते हैं, तो यह दोगुना निन्दनीय हो जाता है क्योंकि सारी देह दुःख उठाती है। पौलुस ने दिखाया कि पाप और अन्याय का सामना करने के लिए कभी-कभी शांतिपूर्ण विचार-विमर्श और झुकने वाले स्वभाव से अधिक की आवश्यकता होती है। जिस रीति से कुरिन्थी व्यवहार कर रहे थे, प्रेरित उसका कोई भाग नहीं चाहता था। उसने इस प्रतिक्रिया को मसीह की देह के प्रतिकूल पाया।

राज्य धर्मियों के लिए है (6:9-11)

9क्या तुम नहीं जानते, कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे? धोखा न खाओ, न वेश्यागामी, न मूर्तिपूजक, न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरूषगामी। 10न चोर, न लोभी, न पियक्कड़, न गाली देने वाले, न अन्धेर करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे। 11और तुम में से कितने ऐसे ही थे, परन्तु तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए, और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे।

आयत 9. इन भाइयों को, भाईचारे की प्रीती और एकता के स्थान पर व्यक्तिगत लाभ के लिए एक दूसरे के विरुद्ध न्यायालय जाने और एक दूसरे को छलने के लिए फटकारा जा रहा था। जिससे कि कोई उसकी इस चिंता को छोटी बात न समझे, पौलुस ने इस व्यवहार को उन क्रियाओं के साथ वर्गीकृत किया जो बिना किसी विवाद के पाप माने जाते थे। उसने ज़ोर देकर कहा कि **न वेश्यागामी, न मूर्तिपूजक, न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरूषगामी** "परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे" (6:10)। उसने उनकी गणना **अन्यायी** लोग में की जो औरों को छलने के लिए तत्पर थे परन्तु शान्ति के लिए स्वयं छले जाने को तैयार नहीं थे।

पौलुस आलंकारिक प्रश्न पूछ रहा था। उसका अभिप्राय था, "निश्चय ही तुम जानते हो कि जो दुष्टता के दोषी हैं, भारी अनैतिकता के आदी हैं, वे परमेश्वर के राज्य के वारिस नहीं हो सकते हैं। जो अन्यजाति-मूर्तिपूजकों के न्यायालयों में अन्याय करते हैं वे ऐसों से भिन्न नहीं हैं।"

परमेश्वर के राज्य का क्या अर्थ है? यह वाक्याँश यीशु की शिक्षाओं की आधार-शिला था और सुसमाचार लेखों में अनेकों बार आता है, यद्यपि यूहन्ना में बहुत कम आया है (देखें यूहन्ना 3:3, 5)। "परमेश्वर के राज्य" का उल्लेख आधा दर्जन बार प्रेरितों में भी हुआ है। पौलुस ने इस वाक्याँश का प्रयोग यदा-कदा ही किया, किसी अन्य की अपेक्षा 1 कुरिन्थियों में अधिक (4:20; 6:9, 10; 15:50)।

एक अर्थ में परमेश्वर के राज्य को अभी आना था। विश्वासियों द्वारा उसे अभी उत्तराधिकार में पाना शेष था। यह राज्य अन्त समय में पूर्णतः कार्यान्वित होगा। एक दूसरे अर्थ में, वह प्रत्येक उस स्थान पर विद्यमान था जहाँ परमेश्वर के लोग थे (देखें 4:20; कुलुस्सियों 1:13)। पौलुस सचेत कर रहा था कि राज्य का भागीदार होने के कारण किसी को शांत होकर सो नहीं जाना चाहिए। मसीहियों को सदा सचेत रहना चाहिए; पाप और अनन्त जीवन का उत्तराधिकारी होने की आपस में कोई संगति नहीं है, न इस युग में और न ही आने वाले में। चतुर तर्क कुछ लोगों को पाप को गंभीरता के बिना लेने के धोखे में डाल सकते हैं, परन्तु पौलुस ने अपने पाठकों को आश्वस्त किया कि खतरा अनन्त उद्धार से कम किसी अन्य बात पर नहीं था। जिन बर्तावों को उसने सूचीबद्ध किया था वे उन पर आचरण करने वालों को परमेश्वर के राज्य से काट डालते थे।

आयत 9 में उल्लेखित पाँच पापों में से चार यौन संबंधित हैं। व्यभिचार और परस्त्रीगमन भिन्नलैंगिक पाप हैं; अंतिम दोनों समलैंगिक पाप हैं। नए नियम में "व्यभिचार" विवाह से बाहर के यौन संबंधों के लिए प्रयुक्त सामान्य शब्द है। परस्त्रीगमन अधिक विशिष्ट रीति से विवाहित, परन्तु एक दूसरे से नहीं, पुरुष और स्त्री के मध्य यौन संबंधों के लिए सामान्य शब्द है। इस प्रकार के तरह-तरह के पाप कोरिन्थ में सामान्यतः किए जाते थे, धर्म के नाम पर भी। यहूदी लोग अन्यजाति-मूर्तिपूजकों के संसार की अनैतिकता से ठीक ही घृणा करते थे।

शब्द μαλακός (*मालाकोस*, "स्त्रीवत"), जातिगत रूप से ऐसे नर्म कपड़ों या अन्य वस्तुओं के लिए प्रयुक्त होता है जो स्पर्श से मुड़ जाएँ। यह शब्द उन जवानों और लड़कों के लिए प्रयोग होने लगा जो समलैंगिक संबंधों में जोड़ीदार होते थे - चाहे इच्छित या अनिच्छित, चाहे मूल्य लेकर या बिना मूल्य के सहमती के साथ।[8] इसका NIV अनुवाद, "पुरुष जो पुरुषों के साथ यौन संबंध रखते हैं," इस शब्द को बहुत संकीर्ण कर देता है। यह समलैंगिक पुरुष द्वारा स्त्रीवत व्यवहार के प्रदर्शन के लिए प्रयुक्त हो सकता है।

प्रत्यक्षतः, पौलुस ने दूसरे पारिभाषिक शब्द को, जिसे "पुरुषगामी" लिखा गया है (ἀρσενοκοίτης, *अर्सेनोकोइटिस*, ἄρσην, अर्सेन, "पुरुष" से, और κοίτη, *कोइटे*, "यौन मिश्रण"), गढ़ा। संभवतः वह LXX में लैव्यव्यवस्था 18:23; 20:13 के शब्दों से ले रहा था। सावधानी से किए गए कुछ टीका संबंधी कार्य के उपरान्त डेविड ई. मलिक इन दो शब्दों के विषय इस निष्कर्ष पर पहुँचे:

ये समलैंगिक संबंधों में सक्रीय और निष्क्रीय पक्षों का वर्णन करते हैं। इनके

> उल्लेख में लौंडेबाज़ी [पुरुष और लड़कों में संबंध] का दुर्व्यवहार भी सम्मिलित है, परन्तु ये यहूदी पवित्र-शास्त्र, विशेषकर लैव्यव्यवस्था 18:22 और 20:13 के संदर्भ में, एक ही लिंग के परस्पर संबंधों की गतिविधियों को भी सूचित कर सकता है।[9]

परन्तु समलैंगिकता के लिए वर्तमान पक्षसमर्थक पौलुस के शब्दों का विरोध या पुनःसमीक्षा करना चाहेंगे, प्रेरित का मानना था कि समलैंगिकता मसीहियों के लिए अस्वीकार्य व्यवहार है।

चाहे कुछ लोग समलैंगिकता की ओर रुचि के साथ जन्म लेते हैं, उससे मसीही दृष्टिकोण से समलैंगिकता का आचरण स्वीकार्य नहीं होता है। लोग स्वार्थी होने, चोरी करने, व्यसनों के आदि होने, और दूसरों की हानि करने की प्रवृत्ति के साथ भी जन्म लेते हैं। अधिकांश मसीही आचार-व्यवहार "स्वाभाविक" मानवीय प्रवृत्तियों पर लगाम लगाने से संबंधित हैं। स्टेनली जे. ग्रेंज ने इसके विषय भली-भांति कहा:

> [आचार-व्यवहार] मात्र स्वाभाविक को स्वीकार करना नहीं है ... चाहे कुछ शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुंचें कि पुरुष स्वाभाविक रीति से कामुक होते हैं, परन्तु यह स्वाभाविक प्रवृत्ति बाइबल के वफ़ादारी के सिद्धांत को हटा नहीं देती है।[10]

इसी प्रकार से, न ही समलैंगिकता के प्रति स्वाभाविक जन्मसिद्ध प्रवृत्ति इसे उचित ठहराती है।

यह पौलुस से अनेपक्षित था कि चार यौन संबंधी पापों की सूची में वह मूर्तिपूजा को भी सम्मिलित कर लेगा। उसने संभवतः ऐसा इसलिए किया क्योंकि अन्यजाति-मूर्तिपूजकों के धार्मिक उत्सवों में बहुधा अनैतिक अनुष्ठान भी जुड़े होते थे। पुराने नियम में, बाल और उसकी जोड़ीदार को समर्पित प्रजनन पंथों में पवित्र वेश्यावृति की गहरी पैठ थी। यह आचरण विशेषकर अरुचिकर था क्योंकि अन्यथा आदरणीय यहूदी पुरुष और महिलाएँ इसकी ओर आकर्षित हो जाते थे। यिर्मयाह ने पूछा, "क्या तू ने देखा कि भटकने वाली इस्राएल ने क्या किया है? उसने सब ऊंचे पहाड़ों पर और सब हरे पेड़ों के तले जा जा कर व्यभिचार किया है" (यिर्म. 3:6)। भविष्यद्वक्ता प्रतीकात्मक रीति से नहीं कह रहा था। इसी प्रकार यूनानी, व्यभिचारपूर्ण अनुष्ठानों को, डायोनेसुस और अन्य देवी-देवताओं को समर्पित करते थे।

आयत 10. प्रेरित सामान्यतः पापों की सूची बनाता था, यद्यपि वह यदा-कदा सद्‌गुणों की सूची भी बना देता था (देखें गला.5:19-23)। वह यौन पापों से उन अन्य बातों की ओर बढ़ा जिनके द्वारा लोग एक दूसरे के साथ गलत कर सकते हैं और स्वयँ अपनी भी हानि कर सकते हैं। **लोभी, पियक्कड़, गाली देने वाले, और अन्धेर करने वाले** पहले की एक सूची में भी थे (1 कुरि. 5:11)। जैसे चोरी लालच से आती है, वैसे ही मसीही जीवन शैली परमेश्वर के लोगों के

समुदाय द्वारा अपनाए गए विश्वास से आती है। पौलुस के दृष्टिकोण से, अंगीकार करने को जीवन शैली से पृथक नहीं किया जा सकता है। अपने मसीही विश्वास का पालन न करने का परिणाम **परमेश्वर के राज्य** के वारिस न होना है।

आयत 11. पौलुस, मसीह यीशु का प्रेरित होने के नाते, अपने पाठकों के सम्मुख पाप के वीभत्स होने को, विषय को वापस छुटकारे पर लाए बिना नहीं रखता। उसने अपने पाठकों को स्मरण करवाया कि वे यीशु के नाम से धोए और पवित्र और धर्मी किए गए थे। यद्यपि पौलुस भाई के विरुद्ध भाई के न्यायालय जाने के विचार से घृणा करता था, उसने अपने पाठकों को स्मरण दिलाया कि मसीह में होने से उनके लिए और उत्तम मार्ग खुल गया था। कुरिन्थुस में मसीहियों का आचरण लोभ का कार्यक्रम प्रतिबिंबित करता था, परन्तु प्रेरित ने उनके भले नैसर्गिक गुणों से आग्रह किया। अनन्त जीवन के मार्ग पर होने के अतिरिक्त, परमेश्वर ने उन्हें इस संसार में आदर के जीवन के लिए बुलाया था। पौलुस को बोध था कि "परमेश्वर मसीहियों को पर्याप्त सामर्थ्य प्रदान कर सकता था जिससे कि वे पापमय लालसाओं का प्रतिरोध कर सकें, चाहे वे लालसाएं उनके पास आती रहें ... मसीह, विश्वासियों को पाप की लत से स्वतंत्र करता है जिससे कि वे अपनी क्रियाओं के बारे में चुनाव कर सकें।"[11]

सुसमाचार की परिवर्तित करने की सामर्थ्य सबसे घोर पापी पुरुषों एवं महिलाओं को परमेश्वर के पवित्र और धर्मी सन्तान बना सकती है। प्रेरित ने मानवीय परिवार में उद्धार लाने के लिए परमेश्वर द्वारा की गई पहल और बचाए हुओं द्वारा महिमान्वित होने के लिए स्वीकार किए जाने वाले उत्तरदायित्व के मध्य अद्भुत संतुलन बना कर रखा। कलीसिया की सामर्थ्य प्रत्येक विश्वासी की साधारण श्रद्धा और परमेश्वर में विश्वास से है।

परमेश्वर में व्यक्त किए गए अपने विश्वास के कुछ वर्षों के उपरांत, रोम की कलीसिया के एक प्राचीन ने परमेश्वर द्वारा की जाने वाली देख-भाल में अपने भरोसे के बारे में लिखा। उसने कोरिन्थ की कलीसिया को लिखे गए अपने पत्र में यह प्रार्थना की:

> प्रभु, हमें अनुदान दें कि हम अपनी आशा को आपके नाम पर स्थापित करें जो कि समस्त सृष्टि का आदिम स्त्रोत है, और हमारे हृदयों की आँखों को खोलें जिससे कि हम आपको, जो एकमात्र सर्वोच्चों में सर्वोच्च, पवित्रों में पवित्र बने रहते हैं, जान सकें; जो घमण्डियों के घमण्ड को नीचे झुका देते हैं: जो जातियों की कल्पनाओं को बिखरा देते हैं; जो नीचों को ऊँचे स्थानों पर और ऊँचों को नीचे ले आते हैं; जो धनी और निर्धन बनाते हैं; जो मारते और जिलाते हैं; जो आत्माओं का भला करने वाले एकमात्र और समस्त शरीरों के परमेश्वर हैं; जो रसातल में भी देखते हैं, जो मनुष्यों के कार्यों को बारीकी से जाँचते हैं; जो जोखिम में पड़े हुओं का आश्रय स्थल, निराशा में पड़े हुओं के बचाने वाले हैं; प्रत्येक आत्मा के सृजनहार और पालनहार हैं; जो जातियों को पृथ्वी पर बढ़ाते हैं, और जिसने सभी मनुष्यों में से उन्हें चुना है जो आपसे यीशु मसीह, आपके प्रिय पुत्र में होकर प्रेम करते हैं, जिसके द्वारा आपने हमें निर्देश दिए, हमें पवित्र

किया, हमें आदर दिया है।[12]

बपतिस्मा के संदर्भ में धोने और जल के बाइबल के अनेकों उल्लेखों से यह स्पष्ट है कि दोनों, पौलुस और उसके पाठक धोए जाने को बपतिस्मा के साथ सम्मिलित करते थे। पौलुस ने आगे कहा, **धोए गए, और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे** (देखें प्रेरितों 22:16; तीतुस 3:5)। वेन ऐ. मीक्स ने इसे ऐसे व्यक्त किया:

> जितने पवित्र समुदाय में प्रवेश करते हैं उन्हें ऐसा "धोए जाने" और "पवित्र होने" और "धर्मी होने" के द्वारा करना है (1 कुरि. 6:11)। इसके अतिरिक्त, यह सारा अनुष्ठान मसीह के साथ मारे जाने और जी उठने का प्रतीक है ... इसलिए स्पष्टतः बपतिस्मा सीमा निर्धारित करने वाला अनुष्ठान है।[13]

बपतिस्मा के बाहरी कार्य को बपतिस्मे की पुष्टि किए जाने वाले विश्वास, प्रेम और समर्पण के भीतरी रवैयों से पृथक नहीं किया जा सकता है। पानी में गाड़े जाना पश्चाताप की आत्मिक मनोवृत्ति के साथ जुड़ा है।

पुराने नियम में पौलुस की गहरी जड़ें दिखाई देती हैं जब उसने **प्रभु यीशु मसीह के नाम से** का उल्लेख किया। "वह नाम" प्रभु के स्थान पर खड़ा है। मुक्तिदाता के नाम का आह्वाहन करने के द्वारा, पौलुस ने धोए जाने, पवित्र किए जाने, और धर्मी ठहराने के कर्ता के रूप में यीशु की पुष्टि की।[14] आत्मा का मध्यस्थता का कार्य परमेश्वर और उसके लोगों के मध्य बंधनों को गढ़ता है। ये लोग मसीह में जैसे हैं, वह उससे बिलकुल भिन्न है जैसे वे इस युग की सन्तान होने से थे। फ़ी ने कहा, "पौलुस के लिए अनुग्रह के अनुभव और अनुग्रह के अनुभव के अनुसार व्यक्ति के आचरण में निकटतम संभव संबंध होना चाहिए।"[15]

यौन पाप से दूर रहना (6:12-20)[16]

एक पत्र में सामान्य तौर पर एक लेख की औपचारिक संरचना की कमी होती है। एक पत्र में एक लेखक पिछले और आगे आने वाले विषय से केवल अस्पष्ट रूप से सम्बन्धित एक विचार को प्रस्तुत कर सकता है। पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 6 अध्याय के अंतिम भाग में स्पष्ट रूप से ऐसा ही किया। पौलुस क्यों कुरिन्थ में होने वाले यौनाचार की ओर अपना ध्यान ले गया और उसने उनके प्रति मसीही प्रतिक्रिया यहाँ क्यों दी? एक ऐसे मनुष्य के साथ सहभागिता करने का मामला जो कि अपने पिता की पत्नी के साथ रह रहा था उसके मन में अभी ताज़ा था (5:1), और उसने एक भाई का दूसरे भाई के प्रति व्यवस्था के विरुद्ध जाना व्यभिचार और मूर्तिपूजा करने के समानान्तर बताया था। कलीसिया में कुछ लोग परमेश्वर के साथ एक व्यक्ति के सम्बन्ध को तोड़ना चाहते थे और जिन बातों की चिंता वे कर रहे थे वे पूरी तरह से शारीरिक कार्य थे। पौलुस इस अलगाव को अनुमति नहीं देने वाला था। पौलुस ने तर्क दिया कि यौन अनैतिकता विचित्र रूप से दुर्बल करने वाला पाप था; यह उन लोगों को दूषित कर देता है जो अपने चित्त में एक गहरे स्तर तक लिप्त होते हैं। यह देह,

मन और प्राण को दूषित करने वाले ढंग से इसमें लिप्त कर लेता है (देखें 6:18)।

भरपूर प्रमाण, विशेषतः कुरिन्थ में धर्मनिरपेक्ष यूनानी-रोमी संस्कृति के निम्न नैतिक स्तर को दर्शाते हैं, विशेषतः कुरिन्थ में वेश्यावृति का व्यापक तौर पर अभ्यास किया जाता था, स्त्री दासों की देह उनके स्वामियों की सम्पत्ति होती थी, समलैंगिकता का उपहास किया जाता था, परन्तु इसे सहन किया जाता था, तलाक स्वीकार्य था, और गर्भपात और शिशुओं का प्रदर्शन करना सामान्य था। प्रेरित को इस बात की आवश्यकता महसूस हुई कि वह कुछ कड़े शब्द लिखे और उसने व्यापक यौन अनैतिकता के विषय में एक मसीही प्रतिक्रिया के तौर पर एक स्पष्ट रवैया अपनाया।

पौलुस की व्याख्या (6:12-17)

अविश्वासियों के सामने एक भाई के दूसरे भाई प्रति व्यवस्था के विरुद्ध जाने के अभ्यास पर पौलुस की नाराज़गी ने दुष्टता के ऊपर अधिक सामान्य तौर पर चर्चा करने की ओर नेतृत्व किया। उसने ऐसे लोगों को जो व्यवस्था के मामलों में अन्याय कर रहे थे परस्त्रिगामियों, मूर्ति पूजकों, चोरों और व्यभिचारियों के समूह में जोड़ दिया (6:9, 10)। जो लोग ऐसे आचरणों में पड़ते हैं उनके लिए परमेश्वर का न्याय प्रतीक्षा करता है; उनका परमेश्वर के राज्य में कोई स्थान नहीं। कुछ कुरिन्थ के मसीही भूतकाल में इस प्रकार के भ्रष्ट आचरण में लिप्त थे; परन्तु वे धोये गए, पवित्र किए गए, और उचित ठहराए गए थे।

यूनानी-रोमी संसार की कलाकृतियाँ लोगों के यौन गतिविधियों में व्यस्त होने की बात प्रकट करती हैं। पुरातत्ववादियों द्वारा खोद कर निकली गई कलाकृतियाँ, पात्रों के ऊपर की गईं चित्रकारियाँ, और साहित्य भी यही गवाही देते हैं। जो लोग उस समय जीवित थे वे इस विषय में अनोखे नहीं थे, परन्तु इतिहास का यह काल अन्य कालों से अधिक यौन क्रियाकलाप में लिप्त प्रतीत होता है। आधुनिक पश्चिमी संसार एक अप्रतिबद्धता वाले यौन आचरण में प्राचीन यूनानी-रोमी संसार के साथ एक समावेश साझा करता है। पौलुस ने यौन अनैतिकता पर इसलिए बात नहीं की क्योंकि यह अन्य दूसरे पापों से घृणित पाप है; बल्कि इस कारण क्योंकि यह संस्कृति में इतने व्यापक तौर पर फैला हुआ था और यह समाज के क्रम और लोगों की खुशहाली के लिए अति विनाशकारी था।

**12सब वस्तुएँ मेरे लिये उचित तो हैं, परन्तु सब वस्तुएँ लाभ की नहीं; सब
वस्तुएँ मेरे लिये उचित हैं, परन्तु मैं किसी बात के अधीन न हूँगा। 13भोजन पेट
के लिये, और पेट भोजन के लिये है, परन्तु परमेश्वर इस को और उस को दोनों
को नष्ट करेगा। परन्तु देह व्यभिचार के लिये नहीं, वरन् प्रभु के लिये है, और
प्रभु देह के लिये है। 14परमेश्वर ने अपनी सामर्थ्य से प्रभु को जिलाया, और हमें
भी जिलाएगा। 15क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह मसीह के अंग हैं? तो क्या
मैं मसीह के अंग लेकर उन्हें वेश्या के अंग बनाऊँ? कदापि नहीं। 16क्या तुम नहीं
जानते कि जो कोई वेश्या से संगति करता है, वह उसके साथ एक तन हो जाता**

है? क्योंकि लिखा है: "वे दोनों एक तन होंगे।" [17]और जो प्रभु की संगति में रहता है, वह उसके साथ एक आत्मा हो जाता है।

आयतें 12, 13. प्रेरित के इस निरीक्षण ने कि मसीही एक धोए गए और पवित्र किए गए लोग हैं, उन लोगों का सामना करने के लिए नेतृत्व किया जो अन्यजातियों के समाज की व्यापक अनैतिकता में लिप्त होने का बचाव करने के इच्छुक थे। सामना करते समय उसके प्रारम्भिक शब्द, **सब वस्तुएँ मेरे लिए उचित तो हैं**, एक सहज घोषणा के रूप में समझने में कठिन होंगे। इस प्रकार की छूट पौलुस के मामले को समझने में सहायता नहीं करती। कुछ अनुवाद, जैसे कि NRSV और NIV (2011), इस वाक्यांश को 12 वीं आयत और दूसरे वाक्यांश को 13 वीं आयत के उद्धरण अंको में रखते हैं। ऐसा करने से अनुवादकों ने अपनी इस भावना को व्यक्त किया कि प्रेरित उन नारों का उल्लेख कर रहा था जो यौनाचार के मिले होने का बचाव करने वालों के द्वारा उपयोग किए जाते थे।

पौलुस ने संलिप्त लोगों को उनके नारों का उल्लेख करते हुए उत्तर दिया और बाद में उसकी त्रुटि के विषय में भी दर्शाया; परन्तु **सब वस्तुएँ मेरे लाभ की नहीं।** उसने पहले ही लिखा था, "मसीह ने हमें स्वतन्त्रता के लिए स्वतन्त्र किया है" (गला. 5:1)। वास्तव में, समझ की एकता में, एक मसीही के लिए "सभी बातें उचित तो हैं"; परन्तु मसीह का शिष्य व्यवस्था से अधिक की चिंता में रहता है। वह ऐसा कार्य करना चाहता है जो लाभकारी है, जो निर्माण करता है, जो जीवन को समृद्ध बनाता है। यह स्वीकार किए बिना कि यौन अनैतिकता उचित है, पौलुस ने यह संकेत दिया कि यदि यह उचित होती, तो भी यह लाभदायक नहीं होती। मसीही आज्ञाकारिता का स्वभाव दिया गया, यदि एक व्यवहार लाभकारिता की परीक्षा को उत्तीर्ण नहीं करता, तो यह उचित भी नहीं है। निरंकुश यौनाचार में संलिप्तता, अन्य पापों के समान ही एक मनुष्य के ऊपर वश करने का एक उपाय है। "जो कोई पाप करता है वह पाप का दास है।" (यूहन्ना 8:34)। पौलुस ने घोषणा की, परन्तु **मैं किसी बात के अधीन न हूँगा।** मसीह प्रेरित के जीवन का स्वामी था, और वह यह जानता था कि कोई भी दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता (मत्ती 6:24)।

यह नारा कि **भोजन पेट के लिए और पेट भोजन के लिए है** वास्तव में भोजन के विषय में नहीं था। यहाँ पर तर्क यह था की यौन अभिलाषाएँ उस प्रकार उकसाती हैं जिस प्रकार भूख भोजन करने के लिए उकसाती है। चूंकि यौन सम्बन्ध और भोजन करना स्वाभाविक अभिलाषाएँ हैं, इनमें से एक में लिप्त होना दूसरे में लिप्त होने से कम पापमय होने के रूप में नहीं देखा जाता था। इस नारे को परमेश्वर के न्याय के प्रकाश में सभी संलिप्तताओं के विषय में समझे जाने की आवश्यकता थी। भोजन के लिए भूख होना पेटूपन के लिए अधिकार नहीं था, और यौन सम्बन्धों की अभिलाषा भी यौन अनैतिकता का अधिकार नहीं है। परमेश्वर ने दोनों भूख के लिए संयम के साथ भरपूरी प्रदान की है। देह और इसकी भूख परमेश्वर की है। एक मसीही को इन्हें उसकी शिक्षा के सन्दर्भ में

संचालित करना चाहिए। ये नारे व्यभिचार के लिए कुछ अधिक प्रेरणा नहीं थे क्योंकि ये उन भाइयों के द्वारा उन आचरणों को उचित ठहराने का एक प्रयास थे जो इन्हें अपने भूतकाल के मूर्तिपूजक जीवनों से लेकर आये थे।

आयत 14. नए नियम में एस्काटोलोजी [eschatology] (प्रभु के पुनरागमन, न्याय, और अन्त के समयों के विषय में शिक्षा) मसीहियों को एक धर्मी जीवन जीने के लिए उत्साहित करती है। पतरस ने 2 पतरस 3:10-12 में "परमेश्वर का दिन" के अपने विवरण को यह कहकर समाप्त किया, "जबकि ये सब वस्तुएँ इस रीति से पिघलनेवाली हैं, तो तुम्हें पवित्र चालचलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना चाहिए ... !" इसी के समान ही, पौलुस ने उसके अनुस्मारक का अनुसरण किया और अपने पाठकों को न्याय के दिन पर ध्यान करने के लिए बुलाते हुए कहा कि देह परमेश्वर के लिए और परमेश्वर देह के लिए। **परमेश्वर ने अपनी सामर्थ्य से प्रभु को जिलाया, और हमें भी जिलाएगा।** जब वह मानवता को पुनर्जीवित करेगा, तो प्रत्येक "मसीह के न्याय आसन के सामने खड़े होगा" (2 कुरि. 5:10)। एक पड़ोसी के मूल्य पर संलिप्तता भूख की तृप्ति करने से अधिक चिंता की बात है। यह परमेश्वर की अनन्त योजना के विरुद्ध है।

आयत 15. यदि पौलुस की चेतावनियों से कुरिन्थ के मसीहियों के बीच आत्मिक कमी का संकेत मिलता है, तो यह कहना सुरक्षित है कि उनमें से कुछ ने वेश्याओं के इस्तेमाल का अभ्यास किया था और उसका बचाव भी किया। वाणिज्य और लोकप्रिय दर्शनशास्त्र के लिए कुरिन्थ एक चौराहा था। सम्भवतः कुरिन्थ के समान व्यापारिक केन्द्रों में वेश्यावृत्ति इसके आकर के अन्य नगरों की तुलना में कहीं अधिक सामान्य रही होगी, परन्तु प्रत्येक यूनानी नगर में मानव माँस के लिए एक बाज़ार था। केवल भोले लोग ही ऐसा मानेंगे कि आज के संसार में ऐसी प्रथाएँ कम प्रचलित हैं।

जब प्रेरित उन लोगों के नारों को खारिज कर चुका जो व्यावसायिक यौन सम्बन्धों को उचित ठहराते थे, तो उसने आगे बढ़कर तर्क दिया कि प्रभु के लोगों के लिए यह बात बचाव करने योग्य नहीं हैं। मसीही उस उद्धारकर्ता से एकता रखते हैं जिसने अपने लोगों को पाप से छुड़ाया है। प्रेरित ने आत्मा और देह को इकाई के रूप में देखा। **तुम्हारी देह**, प्रेरित ने यह घोषणा की - "तुम्हारी आत्माएँ" नहीं, मानो एक व्यक्ति की आत्मा अलग-अलग वस्तुएँ थी - **मसीह का अंग हैं।** जो व्यक्ति कुछ भी करता है चाहे अच्छा या बुरा वह मसीह का अंग कर रहा है। इसी पत्री में बाद में पौलुस ने लिखा, "तुम अब मसीह की देह और अलग-अलग उसके अंग हो" (12:27)। भाई और बहने व्यक्तिगत व्यवहार में भागी बनते हैं; परमेश्वर ने कलीसिया की संरचना इसी प्रकार की है, 6:15 में एक भाषणगत प्रश्न, पौलुस व्यापारिक यौन सम्बन्धों के व्यापक प्रभाव पर ध्यान केन्द्रित कर रहा था: **तो क्या मैं मसीह के अंग लेकर उन्हें वेश्या के अंग बनाऊँ?** यह प्रश्न स्वयं में ही नाराज़गी थी। प्रेरित ने उत्तर दिया **कदापि नहीं** [μὴ γένοιτο, *मेगनिटो*]! एक मसीही के लिए चुनाव केवल अपने लिए कभी नहीं होते। व्यवहार का प्रभाव सबके ऊपर पड़ता है।

आयत 16. एक सम्पूर्ण व्यक्ति को शारीरिक तौर पर क्या प्रभावित करता है। जिस प्रकार बपतिस्मा की भौतिक क्रिया को आत्मिक विश्वास और मसीह की अधीनता से अलग नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार देह में किए गए कार्य एक व्यक्ति के मसीह आत्मिक मेल से अलग नहीं किए जा सकते। पौलुस ने पूछा, **क्या तुम नहीं जानते कि जो कोई वेश्या से संगति करता है, वह उसके साथ एक तन हो जाता है?** एक मसीही की देह विश्वासियों के समाज से बंधी हुई है, और मसीही एक साथ मिलकर मसीह की देह हैं।

> वह कुरिन्थियों को स्मरण करवा रहा था वह ये थी कि वे स्वयं ("हम" - 6:14) मसीह के अंग थे - परन्तु वे स्वाभाविक तौर पर शारीरिक प्राणी थे, जिसके शारीरिक कार्य उनकी प्रतिबद्धता और शिष्यत्व की गुणवत्ता और चरित्र की ओर संकेत करते थे।[17]

पौलुस ने 6:16 में तर्क दिया, परस्त्रीगमन एक निरा भौतिक कार्य नहीं था। उसने उत्पत्ति 2:24 का उल्लेख किया, **"वे दोनों एक तन होंगे।"** एक वेश्या के साथ संगति रखना उस व्यक्ति की सम्पूर्णता को कलंकित कर देता है जो पाप करता है। एक वेश्या के साथ यौन सम्बन्ध स्थापित करना मसीह की देह को अनैतिकता से जोड़ना है। पौलुस इसे सैद्धांतिक रूप से नहीं कह रहा था; यूनानी नगरों के नागरिक और यहाँ तक कि उनके धार्मिक जीवनों में भी वेश्यावृत्ति अंतर्निहित हो चुकी थी। आज के समय में कुछ लोग अन्य लोगों को पशु समझने और एक व्यक्ति को भौतिक संतुष्टि की एक वस्तु बनाने की प्रथाओं को उचित ठहराते हैं, परन्तु ऐसे कोई भी प्रयास बाइबल की नैतिकता को दुर्बल करते हैं। "आकस्मिक यौन सम्बन्धों जैसी कोई वस्तु नहीं जिसके चिरस्थायी परिणाम न हों, यहाँ तक कि तब भी जब साथियों की आपसी लगाव स्थापित करने की कोई भी मंशा न हो।"[18] क्या ये भाई "नहीं जानते थे" कि वे मसीह की देह थे और उन्हें स्वयं को शुद्ध रखने की आवश्यकता थी? वास्तव में वे जानते थे।

आयत 17. पौलुस ने पुरुष के एक वेश्या से जुड़ने और एक मसीही के मसीह से जुड़ने को बताने के लिए एक ही शब्द (κολλάομαι, *कोल्लओमई*) का उपयोग किया। वह व्यक्ति जो प्रभु की संगति में रहता है और बाद में वेश्या की संगति करता है यह उसके लिए मसीह और उसके लोगों का उपहास करना है। **मसीह से सम्बन्धित** होना **उसके साथ एक आत्मा होना है।** एक व्यक्ति का वेश्या से संगति करना आखिरकार मसीह के साथ मेल के विषय में झूठ बोलना है।

पौलुस का उपदेश (6:18-20)

[18]व्यभिचार से बचे रहो। जितने अन्य पाप मनुष्य करता है वे देह के बाहर हैं, परन्तु व्यभिचार करनेवाला अपनी ही देह के विरुद्ध पाप करता है। [19]क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है, जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है; और तुम अपने नहीं हो? [20]क्योंकि

दाम देकर मोल लिये गए हो, इसलिये अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।

आयत 18. यौन मिलाप की घनिष्ठता में देह के साथ अपराध करना एक अनोखे चरित्र का पाप है। एक आज्ञासूचक शब्द का उपयोग करते हुए जो कि हताशा से संबन्धित था, प्रेरित ने विनती की, **व्यभिचार से बचे रहो।** यौन अनैतिकता ही केवल एक तरीका नहीं है जिससे कोई अनैतिक हो सकता है, परन्तु पौलुस ने इसे विचित्र रूप से विनाशक के रूप में देखा। परस्त्रीगमन (व्यभिचार) पापों में एक अनोखा पाप है जो मानव शरीर को वश में कर लेता है। प्रेरित ने तर्क दिया जितने **अन्य पाप मनुष्य करता है, वे देह के बाहर हैं, परन्तु व्यभिचार करनेवाला अपनी ही देह के विरुद्ध पाप करता है।** एक निरे कार्य से बढ़कर, यौन अनैतिकता में सम्पूर्ण व्यक्तित्व की आवश्यकता पड़ती है। ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी के एक यहूदी दस्तावेज़ के एक भाग में, जिसे शमौन का नियम भी कहा जाता है, जो याकूब की पत्नी लिआ का दूसरा पुत्र था, वह चेतावनी देता है, "यौन संलिप्तता से स्वयं की रक्षा करो, क्योंकि व्यभिचार सभी दुष्ट कर्मों की माँ है; यह मनुष्य को परमेश्वर से अलग करके बलियाल की और ले जाता है"[19] पौलुस ने सम्भवतः यह पूछा होगा, "एक मनुष्य अपनी देह के परे क्या है?" यौन भूख को तृप्त करने का परिणाम आकस्मिक तौर पर विचित्र आत्म-विनाश होता है। टूटे हुए घर और बिखरे हुए जीवन प्रेरित की अंतर्दृष्टि की साक्षी देते हैं। जिम्मी एलेन ने उस ज्ञान को साझा किया है जो पवित्रशास्त्र में बार-बार देखा गया है। "अब दुष्ट उनके पापों के लिए अधिक सज़ा नहीं पाते जितना वे अपने पाप के द्वारा सज़ा भोगते हैं।"[20]

आयत 19. जब पौलुस ने यह लिखा कि, **क्या तुम नहीं जानते ... ,** तो इसका भाव यह था कि "तुम निस्संदेह यह बात जानते हो।" कुछ समय पहले, पौलुस ने कलीसिया को एकता के विषय में स्मरण करवाकर कुरिन्थ के मसीहियों से यह विनती की थी, कि वे सभी एक साथ मिलकर, परमेश्वर का मन्दिर थे (3:16, 17; देखें कुरि. 6:16)। प्रेरित ने "परमेश्वर के मन्दिर" और **पवित्र आत्मा के मन्दिर** के बीच कोई भेद नहीं किया। ये दोनों वाक्यांश अंतर-परिवर्तनीय हैं। यह उपसंहार कि कलीसिया संयुक्त रूप से परमेश्वर का घर है परन्तु पवित्रात्मा मसीही में व्यक्तिगत तौर पर वास करता है यह अनुचित है। संयुक्त रूप से और व्यक्तिगत तौर पर, परमेश्वर पिता, पुत्र परमेश्वर, और पवित्रात्मा परमेश्वर विश्वासियों वास करता है। अंतरनिवास इस बात की पुष्टि है कि विश्वासी भीतर रहने वाले दूत की उपस्थिति और शक्ति से संतृप्त किए गए हैं। चाहे यह विश्वास (2 तीमु. 1:5), परमेश्वर (2 कुरि. 6:16), और आत्मा (रोम. 8:11), वचन (कुलु. 3:16), या मसीह (कुलु. 1:17), की भीतर वास करने की बात हो, इसमें व्यापक प्रभाव की चेतना सम्मिलित होती है।

वर्तमान के सन्दर्भ में, प्रेरित व्यक्ति की शाब्दिक देह के विषय में लिख रहा था। वह यह दिखा रहा था कि एक व्यक्ति की देह को वेश्या के साथ जुड़ना नहीं

चाहिए। 3:16, 17 में एक भावार्थ का उपयोग करते हुए, पौलुस ने सम्पूर्ण कलीसिया को परमेश्वर के मन्दिर में प्रस्तुत किया है। 6:19 में अपने रूपक को दूसरी और ले जाते हुए, पौलुस ने घोषणा की और कहा कि प्रत्येक की देह को "पवित्रात्मा के मंदिर" के रूप में बताया।[21] परमेश्वर की कलीसिया और व्यक्तिगत विश्वासी के लिए एक संयुक्त देह के रूप में वरदान पवित्रात्मा है (देखें प्रेरितों 2:38; गला. 4:6)। भीतर वास करने वाला आत्मा परमेश्वर के स्वामित्व का चिन्ह हैं। या कलीसिया अथवा एक व्यक्तिगत विश्वासी को संयुक्त रूप से "परमेश्वर का मन्दिर" या "आत्मा का मन्दिर" कहा जा सकता है। प्रेरित ने पाया कि किसी भी मामले में, एक ऐसे व्यक्ति के द्वारा वेश्या की संगति करना जिसमें ईश्वर वास करता है यह एक सोचने लायक बात नहीं थी।

आयत 20. मसीहियों की कलीसिया की देह में सहभागिता का अर्थ था कि कुरिन्थ में प्रत्येक व्यक्तिगत सदस्य की अनैतिकता या धार्मिकता सम्पूर्ण मण्डली की लज्जा या महिमा का कारण होती। व्यक्तिगत विश्वासियों के व्यवहार ने न केवल प्रभु के ऊपर चिन्तन किया जो उन पर राज्य करता था, बल्कि उनके "व्यभिचार से बचे रहने" का एक और महत्वपूर्ण कारण था (6:18)। **वे एक दाम देकर मोल लिए गए थे।** वे उनके अपने नहीं थे। उनके खरीदने का मूल्य - हमारे ही समान - मेमने का बहुमूल्य लहू था (देखें यूहन्ना 1:29; 1 पतरस 1:18, 19)।

इसलिए कि दासत्व यूनानी-रोमी जीवन का प्रतिदिन का भाग था, "एक दाम देकर मोल लिए गए हो" शब्द का अर्थ पौलुस की पत्री के प्रथम पाठकों के लिए जितना आज के पाठकों के लिए है उस अर्थ से कहीं अधिक था। कुरिन्थ में कुछ मसीह वास्तव में दूसरों के दास थे (देखें 7:21, 22)। यह संकेत कि "तुम दाम देकर मोल लिए गए हो" एक प्रश्न के लिए भूमि प्रदान करता है। **इसलिए अपनी देह में परमेश्वर की महिमा करो।** मसीह के लिए उचित प्रतिक्रिया उसके अनुग्रह पर भरोसा रखने वालों के भागों पर शरीर और आत्मा की आज्ञाकारी प्रतिक्रिया है।

अनुप्रयोग

मसीही और न्यायालय

आज अधिकतर स्थानों पर प्रशासन, कानून और व्यवस्था, न्याय प्रणाली और सामाजिक संस्थान उस यूनानी-रोमी संसार की तुलना में काफ़ी भिन्न हैं जिसमें पौलुस और उसके पाठक रहा करते थे। इसी के अनुसार, परस्पर संस्कृतियों में एक भाई का दूसरे भाई के प्रति व्यवस्था के विरुद्ध जाने के विषय में पौलुस की चेतावनियों को हस्तांतरित करना कठिन है। पौलुस के शब्दों का सावधानी से प्रयोग किया जाना चाहिए।

कानूनी विवादों में एक व्यक्ति सम्मिलित हो सकता है जो दूसरे की सम्पत्ति या अधिकारों के ऊपर दावा करने के लिए तकनीकी लाभ लेता है। जो कोई बात वैध (कानूनी) है वह अवश्य ही नैतिक तौर पर बचाव के योग्य हो ऐसा नहीं है।

जिनके पास धन और संसाधन हैं वे एक पड़ोसी की सम्पत्ति पर दावा कर सकते हैं। किसी दूसरे व्यक्ति की मजबूरी, अज्ञान, या निर्धनता का अपने फायदे के लिए लाभ उठाना परमेश्वर के क्रोध को आमन्त्रण देना है। राजा अहाब ने नाबोत की दाख की बारी का लालच किया (1 राजा 21:1, 2)। जब नाबोत ने उसे बेचने से मना किया, तो अहाब की पत्नी इज़ेबेल ने झूठे गवाहों को उसके विरोध में गवाही देने के लिए नियुक्त किया और उस पर पथराव करवा दिया। परमेश्वर ने घोषणा करके कहा कि राजकीय दम्पत्ति का इस पाप का दाम चुकाना होगा (1 राजा 21:9-23)।

वैकल्पिक रूप से, दो नेक नीयत वाले व्यक्ति एक परिस्थिति को अलग-अलग देख सकते हैं। दोनों इस बात पर सहमत हो सकते हैं कि वे सही हैं। यदि दोनों लोग मसीही हैं, तो पौलुस की चेतावनी यह होगी कि वे किसी अन्य बुद्धिमान व्यक्ति से बात करें, और प्रत्येक व्यक्ति बात मानने के लिए तैयार रहे। पौलुस ने कहा, इस प्रकार के विवादों को भाइयों के बीच में दीवार बनने की अपेक्षा “अपनी हानि सहो” (1 कुरि. 6:7)। यदि आपसी सहमती तक नहीं पहुँचा जा सकता, तो प्रेरित ने ज़ोर देकर कहा कि भाइयों को अपना मुकद्दमा कलीसिया के बुद्धिमान लोगों के समक्ष लाना चाहिए। मसीह की आत्मा में होकर, दोनों व्यक्तियों को अपने न्याय को स्वीकार करना चाहिए।

केवल चरम पर पहुँच चुके मामलों में ही एक विश्वासी का एक भाई को एक धर्मनिरपेक्ष न्यायालय सामने ले जाना उचित होगा। जब एक व्यक्ति एक विवाद में भले विश्वास में होकर साथी मसीहियों के निर्णय को स्वीकार करने से मना करे, केवल तब ही यह अंतिम आश्रय होना चाहिए। इसी प्रकार के मुकद्दमों में सम्मिलित होना केवल एक पराजय होगा (6:7)। एक मण्डली को किसी भाई के विरोध में अनुशासनात्मक कार्यवाही करने की आवश्यकता पड़ सकती है जो इस प्रभु की कलीसिया के प्रति इस प्रकार के लालच और इस प्रकार के अपमान का प्रदर्शन करेगा।

लज्जा और आदर

लज्जा, दोष भावना, आदर, गर्व, और अच्छा विवेक, इन सब में मनोवैज्ञानिक और सामाजिक दोनों आयाम होते हैं। मनोवैज्ञानिक तौर पर, एक व्यक्ति में किसी निश्चित व्यवहार या कार्य के प्रति भीतरी तौर पर गर्व या दोष की भावना हो सकती है। और उसी समय, वह इस बात के विषय में सचेत भी हो सकता है कि अन्य लोग उसके द्वारा किए गए इस कार्य के विषय में क्या सोचते हैं। लज्जा और आदर से प्रकट होता है कि किसी को उसके मित्रों और परिवार के द्वारा किस प्रकार देखा जाता है। आधुनिक संस्कृतियाँ लोगों की दोषभावना और भले विवेक को देखने के ढंग की तुलना में प्राचीन यूनानी-रोमी संसार से बहुत ही भिन्न हैं। इन गुणों के सामाजिक आयाम आज की तुलना में प्राचीन संसार में अधिक चिन्हित थे। सामाजिक स्थान के विषय में चिंता को इस यहूदी प्रार्थना में देखा जा सकता है, “और मुझे न तो पाप के हाथों में कर, न ही अधर्म के हाथों में,

और न ही परीक्षा के हाथों में, और न ही अपमान के हाथों में कर।”22

जब पौलुस ने कुरिन्थियों से यह कहा कि, “मैं ये तुम्हें लज्जित करने के लिए कहता हूँ” (6:5), तो वह उन्हें यह नहीं बता रहा था कि उन्हें एक धीमी, भीतरी आवाज़ धिक्कारेगी। पौलुस के प्रथम पाठकों के लिए लज्जा एक व्यक्तिगत मामला नहीं था। खुला पाप उनके मसीह समाज का अपमान करवाता, मण्डली की दृष्टि में भी और अविश्वासी संसार की दृष्टि में भी। जब एक भाई दूसरे भाई के प्रति व्यवस्था के विरोध में गया, तो संयुक्त रूप से कलीसिया की प्रतिष्ठा की हानि हुई। लज्जा एक सामाजिक मामला था।

मनोवैज्ञानिक और सामाजिक, विश्वास के दोनों आयाम परमेश्वर के साथ एक बचे हुए सम्बन्ध में जीने के लिए महत्वपूर्ण हैं। हालाँकि, शताब्दियों से, सामाजिक आयाम ने मसीही विवेक को कम किया है। यह सामान्य प्रश्न कि “क्या यीशु आपका व्यक्तिगत उद्धारकर्ता है?” यह संकेत करता हुआ प्रतीत होता है कि प्रभु के विषय में कौन क्या अनुभव करता है। केवल यही महत्त्व रखता है और कलीसियाई जीव बिना परिणामों का है। इसके विपरीत, एक मसीही होने में एक व्यक्ति को विश्वासियों के मण्डली में भाग लेने, और एक कलीसिया एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में सेवा करने की आवश्यकता पड़ती है (1 कुरिन्थियों 12:12, 13)। लज्जा, दोषभावना, आदर, गर्व और भले विवेक को अनुभव करना, एक मसीही समाज में होने के सन्दर्भ में आता है।

समलैंगिकता

जिनके विषय में पौलुस ने कहा कि “वे परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं होंगे” उन लोगों के मध्य में “पुरुषगामी” और “समलैंगिक” भी हैं (6:9)। इसका अर्थ स्पष्ट है। NASB के अनुवादकों ने जिस शब्द का अनुवाद “पुरुषगामी” (effeminate) के रूप में किया उसका शाब्दिक तौर पर अर्थ है “वे पुरुष जो पुरुषों के साथ यौन सम्बन्ध स्थापित करते हैं। पवित्रशास्त्र के अधिकार और बाइबल के परमेश्वर के द्वारा प्रेरित होने के विषय में चाहे कोई कुछ भी विश्वास करे, फिर भी वचन किसी के लिए यह तर्क देने का कोई स्थान नहीं छोड़ता कि बाइबल समलैंगिकता के अभ्यास को नैतिक तौर पर स्वीकार करने के विषय में तटस्थ है।

कुछ लोग समलैंगिक आचरण को यह कहकर उचित ठहराने का प्रयास करते हैं कि परमेश्वर ने उन्हें इसी प्रकार बनाया है। उनका तर्क यह है कि जिस प्रकार बालों का रंग और डील-डौल स्वाभाविक है उसी प्रकार समलैंगिकता भी स्वाभाविक है। मसीही इस बात पर बल देते हैं कि प्राकृतिक बालों के रंग के समान भौतिक लक्षण समलैंगिकता के आचरण के समान नहीं हैं, चूंकि इसके बाद यह एक प्रवृति होती है कोई इसके ऊपर चलने और न चलने का चुनाव कर सकता है। यदि एक आचरण की सम्पूर्णता के माप का निर्धारण किसी की प्रवृत्ति के अनुसार किया जाए, तो सही और गलत अपना अर्थ ही खो देंगे। कोई व्यक्ति यह बात कह सकता है कि वह अन्य लोगों से अधिक लालची स्वभाव के साथ

पैदा हुआ है, तो चोरी उसके लिए स्वीकार्य होनी चाहिए। इसी प्रकार के तर्क को किसी बालक के शोषण करने वाले के मामले में या एक हिंसक व्यक्ति के मामले में भी उपयोग किया जा सकता है जो कहता है कि वह अपने क्रोध पर काबू नहीं कर सकता।

समलैंगिक आतंकी न केवल इस बात पर ज़ोर देते हैं कि उन्हें अपने जीवन को जीने के ढंग का चुनाव करने का अधिकार है, बल्कि यह भी कहते हैं कि सभी को उनके आचरण को स्वीकृति की दृष्टि से देखना चाहिए। हालाँकि, बाइबल इस विषय पर स्पष्टता से बात करती है। कानून के द्वारा पक्षपात, हिंसा और रोक, समलैंगिकता को रोकने का विकल्प नहीं हैं; परन्तु जब कोई उस बात का अभ्यास करता है जिसकी पहचान बाइबल पाप के रूप में करती है और इस बात पर बल देता है कि मसीही इसे स्वीकार करते हैं, इसके बाद वे अन्य लोगों के अधिकारों और विवेक को नहीं मानते। जैसा कि बाइबल में सिखाया गया है कि विवाह एक पुरुष और स्त्री के बीच में है (उत्पत्ति 2:24; मत्ती 19:5। समलैंगिकता का अभ्यास करना एक व्यक्ति को स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने से रोक देता है। बाइबल की शिक्षा किसी भी प्रकार से इस की अनुमति प्रदान नहीं करेगी।

समाप्ति नोट्स

[1]इस खण्ड के शीर्षक को *अबंडेन्ट लाइफ़ बाइबल, न्यू लिविंग ट्रांसलेशन*, 2न्ड एड. (व्हीटन, इल्ल.: टिन्डेल हाउस पब्लिशर्स, 2004), 873 से लिया गया है। [2]वेयन ऐ. मीक्स, *द फ़र्स्ट अर्बन क्रिश्चियन्स: द सोशल वर्ल्ड ऑफ़ द अपौस्ल पौल*, 2न्ड एड. (न्यू हैवन, कौनन.: येल यूनिवर्सिटी प्रैस, 2003), 129. [3]डेविड ई. गारलैंड, *1 कोरंथियांस*, बेकर एक्सेजेटिकल कॉमेन्ट्री ऑन द न्यू टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिच.: बेकर एकाडिमिक, 2003), 197. गारलैंड ने अपने दावों की पुष्टि के लिएप्राचीन स्त्रोतों को उद्धृत किया। [4]सिसरो *अगेंस्ट वेर्रेस* 1.1.1. [5]एमिल शूर्र, *द हिस्ट्री ऑफ़ ज्यूइश पीपुल इन द ऐज ऑफ़ जीसस क्राईस्ट*, रिव. एण्ड एड. गेज़ा वर्मेस, फ़र्ग्युस मिल्लर, एण्ड मार्टिन गुडमैन (एडिनबरा: टी. और टी. क्लार्क, 1986; रीप्रिंट, लंडन: ब्लूम्सबरी, 2014), 3:119. [6]पूर्वोक्त, 3:119-20. [7]गोर्डन डी. फ़ी, *द फ़र्स्ट ऐपिस्ल टू द कोरिन्थियंस*, द न्यू इंटरनैशनल कमेंट्री ऑन द न्यू टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिच.: वम. बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग को., 1987), 233. [8]वॉल्टर बौअर, *ऐ ग्रीक-इंगलिश लेक्सिकॉन ऑफ़ द न्यू टेस्टामेंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिट्रेचर*, 3रड एड., रेव. एण्ड एड. फ़्रेड्रिक विलियम डैन्कर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 613. [9]डेविड ई. मलिक, “द कन्डम्नेशन ऑफ़ होमोसेक्सुअलिटी इन 1 कुरिन्थियंस 6:9,” *बिबलोथीका सेक्रा* 150 (ओक्टूबर-दिसंबर 1993): 490. [10]स्टेनली जे. ग्रेंज, *सेक्सुअल एथिक्स: ए बिबलिकल पर्सपेक्टिव* (डैलस: वर्ड पब्लिशर्स, 1990), 206.

[11]बेन विदरिंगटन III, *कॉन्फ्लिक्ट एण्ड कौम्यूनिटी इन कोरिन्थ: ऐ सोशियो-रिह्टौरिकल कॉमेन्ट्री ऑन 1 एण्ड 2 कोरिन्थियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिच.: वम. बी. ईर्डमैन्स पबलिशिंग को., 1995), 166. [12]*1 क्लेमेंट* 59.3. [13]मीक्स, 102. [14]बपतिस्मा और “धोए जाने” को पृथक करने के फ़ी के प्रयासों के सही प्रत्युत्तर के लिए एक पूरे शोध-लेख की आवश्यकता होगी (फ़ी, 246-47)। अन्य बातों के साथ यह भली-भांति जाना जाता है कि नए नियम के लेखक बहुधा पूर्वसर्गों ἐν (ऐन) और εἰς (ऐस) को एक दूसरे के साथ अदल-बदल के प्रयोग करते थे। पौलुस द्वारा “के नाम से” का “के नाम में” के स्थान पर प्रयोग करना ऐसा कोई कारण नहीं देता कि बपतिस्मा का विचार रद्द

कर दिया जाए। बपतिस्मा, धोया जाना, और पुनर्जन्म का तीतुस 3:5 में निकटता का संबंध है। पतरस द्वारा नए जन्म के उल्लेख में (1 पतरस 1:23-2:3) व्याख्याकर्ताओं को बपतिस्मा संबंधी भाषा का प्रयोग भले कारणों से ही प्रतीत होता है। [15]उपरोक्त, 248. [16] इस खण्ड के शीर्षक को *अबंडेन्ट लाइफ़ बाइबल, न्यू लिविंग ट्रांसलेशन,* 2न्ड एड. (व्हीटन, इल्ल.: टिन्डेल हाउस पब्लिशर्स, 2004), 873 से लिया गया है। [17]जेम्स डी. जी. डन, *द थियोलॉजी ऑफ़ पॉल थे अपोस्ल* (ग्रैंड रैपिड्स, मीच.: डब्ल्यू एम्. बी. अर्डमेन्स पब्लिशिंग को., 1998), 58. [18]गारलैंड, 234. [19]"टेस्टामेंट ऑफ़ द ट्वेल्व पेट्रीयेक्स," 5.3, ट्रांस. एच. सी. की., इन जेम्स एच. चार्ल्सवर्द, एड, *डी ओल्ड टेस्टामेंट सूडोपिग्राफा* (गार्डन सिटी, न्यूयॉर्क: डबलडे एंड को, 1983), 1:786. [20]जिम्मी एलन, *सर्वे ऑफ़ रोम्नस,* 7 एड, (सीर्की, आर्क: बाई द ऑथर, 1994), 105.

[21]यह तब सत्य था जब पौलुस ने द्वितीय व्यक्ति "तुम" के लिए बहुवचन बाले सर्वनाम उपयोग किए। जो कुरिन्थ में सभी मसीहियों के लिए सत्य था वह उनमें से प्रत्येक के लिए व्यक्तिगत तौर पर भी सत्य था। [22]ताल्मुड *बेराकोथ* 60b.